रंग-तरंग

हमारी संस्कृति के परिचायक महोत्सव

बीतों दिनों इटावा में चल रहे 116 वर्ष पुरानी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर इटावा महोत्सव के पंडाल कार्यक्रमों का रविवार को समापन हो गया, लेकिन डीएम ने महोत्सव की अवधि को 20 दिन और बढ़ाने की घोषणा की। अब लोग अगले करीब तीन सप्ताह तक प्रदर्शनी और मेले का लुत्फ उठा सकेंगे। विदाई की इस शाम में प्रखर गौर की सरस्वती वंदना और अजीत नारायण चतुर्वेदी के विदाई गीत ने माहौल को भावुक कर दिया। विशम्भर नाथ भटेले और रौनक इटावी ने अपनी गजलों के माध्यम से महोत्सव के गौरवशाली इतिहास का बखान किया। डीएम ने कहा कि इटावा महोत्सव अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के कारण देश के चुनिंदा आयोजनों में शामिल है। यह केवल एक मेला नहीं, बल्कि जिले का लोक पर्व है।

औरंगाबाद में दाउदनगर महोत्सव का समापन बीते दिनों हुआ। महोत्सव के दूसरे दिन भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ दाउदनगर महोत्सव मनाया गया। वक्ताओं ने दाउदनगर महोत्सव की सराहना करते हुए कहा कि इसके माध्यम से अपने गौरवशाली इतिहास और वर्तमान को याद किया जा रहा है। ऐसे आयोजन सांस्कृतिक चेतना को सशक्त करते हैं। महोत्सव में दाउदनगर के गौरवशाली और इतिहास पर आधारित डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

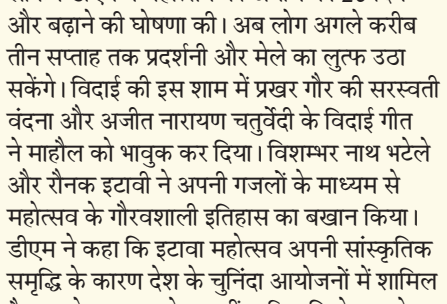

हरदा में लोकल फॉर वोकल के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से दस दिवसीय स्वदेशी मेले का आयोजन किया जा रहा है। यह स्वदेशी मेला अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड शो की तर्ज पर आयोजित किया जा रहा है, जिसका मकसद है स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों और महिलाओं के स्व-सहायता समूहों को मंच प्रदान करना है, ताकि वे अपने हुनर और उत्पादों को सीधे जनता तक पहुंचा सकें।

लाल इमारतों वाला वैभवशाली शहर बीकानेर

विनीत गुप्ता
कानपुर

राजस्थान में बीकानेर एक जीवंत शहर है, जिसका अपना अनूठा इतिहास है। इसे लाल शहर भी कहा जाता है। हालांकि बीकानेर का नाम आते ही भुजिया और नमकीन का स्वाद जुबान पर अनायास आ जाता है। बीकानेर का जूनागढ़ किला एक ऐतिहासिक और भव्य किला है। किले का मूल नाम चिंतामणि था और यह एक खाई से घिरा हुआ था। बाद में, 1902 में शाही परिवार के लालगढ़ नामक नए महल में स्थानांतरित होने के बाद इसका नाम बदलकर जूनागढ़ कर दिया गया, जिसका अर्थ है 'पुराना किला'। इसका निर्माण राजा राय सिंह ने 1589 से 1594 के बीच कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से बना है, जिसमें मुगल और राजस्थानी वास्तुकला का अद्भुत मिश्रण दिखता है। इसके भीतर कई खूबसूरत महल, जैसे बादल महल और अनूप महल स्थित हैं। जूनागढ़ किला न केवल एक ऐतिहासिक स्मारक है, बल्कि एक जीवंत संग्रहालय भी है।

चार महलों से घिरा डूंगर निवास चौक

जूनागढ़ किले ने अपने इतिहास में कई युद्ध और घेराबंदी देखी, लेकिन इस पर कभी किसी शत्रु का कब्जा नहीं रहा। यह किला लगभग 5 .28 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है और 37 बुर्जों और सात द्वारों वाली एक ऊंची दीवार से घिरा हुआ है। किले का मुख्य प्रवेश द्वार सूरज पोल है, जो पूर्व दिशा की ओर है और सूर्य देवता के चित्रों से सुशोभित है। अन्य द्वार दौलत पोल, चांद पोल, करण पोल, फतेह पोल, फूल महल पोल और लक्ष्मी नाथ पोल हैं। किले में कई प्रांगण हैं, जो अंदर स्थित विभिन्न संरचनाओं को आपस में जोड़ते हैं। इनमें सबसे प्रमुख प्रांगण डूंगर निवास चौक है, जो चार महलों करण महल, अनूप महल, चंद्र महल और गंगा महल से घिरा हुआ है। इन महलों की भव्य आंतरिक साज-सज्जा देखने वाली है। किले में हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित कई मंदिर हैं, जैसे हर मंदिर (भगवान विष्णु का मंदिर), रतन बिहारी मंदिर (भगवान कृष्ण का मंदिर), लक्ष्मी नाथ मंदिर (भगवान विष्णु और लक्ष्मी का मंदिर) और शिव मंदिर हैं। ये मंदिर मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। किले में कई संग्रहालय हैं, जिनमें बीकानेर के इतिहास व संस्कृति से संबंधित कलाकृतियों, हथियारों, वेशभूषा, आभूषणों, चित्रों, पांडुलिपियों और अन्य वस्तुओं का समृद्ध संग्रह प्रदर्शित किया गया है। यह देश का एकमात्र किला है, जहां पर्यटकों को महाराजा राय सिंह जी ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क गाइड उपलब्ध कराए जाते हैं।

राजपूताना, इस्लामी और यूरोपीय वास्तुकला की झलक लालगढ़ पैलेस

महाराजा गंगासिंह ने 1902 में इस भव्य राजमहल का निर्माण, अपने स्वर्गीय पिता महाराजा लाल सिंह की स्मृति में करवाया था। इसके वास्तुशिल्प की रूपरेखा की अवधारणा, एक अंग्रेज वास्तुविद् 'सर स्विंटन जैकब' द्वारा की गई थी। यह महल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा राजपूताना, इस्लामी तथा यूरोपीय वास्तुकला के मिश्रण से इसे मूर्तरूप प्रदान किया गया है। वर्तमान में इसे हैरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। इसके एक हिस्से में श्री सादुल म्युजियम है।

करणी माता का मंदिर

बीकानेर यात्रा के अगले दिन हम दुनियाभर में चूहों के लिए प्रसिद्ध करणी माता मंदिर पहुंचे। यह मंदिर बीकानेर से 30 किमी की दूरी पर देशनोक गांव में स्थित है। इसे 'टैम्पल ऑफ रैट्स' कहा जाता है। बताया गया कि यहां लगभग 25,000 काले चूहे हैं, जिन्हें 'कबा' कहते हैं। इनकी पवित्रता इस बात से उजागर होती है कि यदि किसी के पांव से कोई चूहा दबकर मर जाए, तो उसे चांदी का चूहा बनवाकर करणी माता के चरणों में चढ़ाना पड़ता है। एक किंवदंती के अनुसार करणी माता के सौतेले बेटे लक्ष्मण की एक तालाब में डूबने से मृत्यु हो गई थी। करणी माता ने यमराज से उन्हें जीवित करने के लिए प्रार्थना की। यमराज ने पहले मना कर दिया फिर इस शर्त पर मान गए कि उस दिन के बाद से लक्ष्मण तथा करणी माता के सभी वंशज चूहे के रूप में जिंदा रहेंगे। इसके बाद से चूहों को पवित्र मानकर मंदिर में भक्त लड्डू व दूध की बड़ी परातें चढ़ाते हैं, जिन्हें चूहे खाते-पीते हैं। चूहों का खाया हुआ प्रसाद सत्कार माना जाता है। गर्भगृह में करणी माता की मूर्ति स्थापित है। करणी माता मंदिर का द्वार सफेद संगमरमर से बनी एक सुंदर संरचना है। बड़ी संख्या में नवविवाहित यहां माता का आशीर्वाद लेने आते हैं।

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र एशिया का अपनी तरह का एकमात्र केन्द्र हैं, जहां ऊंटों का रखरखाव तथा उन पर अनुसंधान और प्रजनन संबंधित कार्य किए जाते हैं। शहर के करीब स्थित यह केन्द्र 2000 एकड़ से अधिक भूमि पर फैला है तथा इसका संचालन भारत सरकार द्वारा किया जाता है।

राजसी वास्तुकला वाला प्रसिद्ध गजनेर पैलेस

गजनेर थार का अतुलनीय गहना है। 1784 में बीकानेर के महाराजा गज सिंह जी ने गजनेर पैलेस की स्थापना की थी। यह अपनी राजसी वास्तुकला, गजनेर झील के किनारे शांत वातावरण, वन्यजीव अभयारण्य और शाही जीवनशैली के अनुभव के लिए प्रसिद्ध है। यह महल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। यहां पर अब लक्जरी सुविधाएं और प्रकृति-प्रेमी गतिविधियां जैसे सफारी, बर्ड वॉचिंग उपलब्ध हैं। यह शाही परिवार के साथ ही अतिथियों के लिए शिकारगाह और आराम गाह था। अब इसे एक हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है।

आर्ट गैलरी

फ्रीडा की 'पोर्ट्रेट ऑफ एलिसिया गैलेंट'

'पोर्ट्रेट ऑफ एलिसिया गैलेंट' नाम की यह कलाकृति मशहूर कलाकार फ्रीडा काहलो ने 1927 में बनाई थी। यह पेंटिंग कैनवास पर ऑयल कलर से बनाई गई है। यह नैव आर्ट मूवमेंट, खासकर प्रिमिटिविज्म से जुड़ी है। इसमें एक पोर्ट्रेट दिखाया गया है और यह डोलोरेस ओल्मेडो कलेक्शन का हिस्सा है, जो मेक्सिको सिटी में है। इस कलाकृति में गहरे बैकग्राउंड के सामने बैठी हुई एक महिला दिख रही। इसमें एलिसिया गैलेंट को शांत और गंभीर अंदाज में दिखाया गया है। उसके बाल इस तरह से बनाए गए हैं, जो उसके चेहरे के लंबे आकार और उसकी शांत, गहरी नजरों को उभारते हैं। उसने गहरे रंग के कपड़े पहने हैं, जिसके गले पर लाल और सुनहरे रंग की डिजाइन है, जो उसके चेहरे पर ध्यान खींचती है। रंगों का हल्का इस्तेमाल पेंटिंग के गंभीर माहौल को दिखाता है। दाईं ओर पौधों के तत्वों की मौजूदगी एक प्राकृतिक मोटिफ पेश करती है, जो आकृति की शांति के साथ एक हल्का कंट्रास्ट पैदा करती है।

फ्रीडा के बारे में

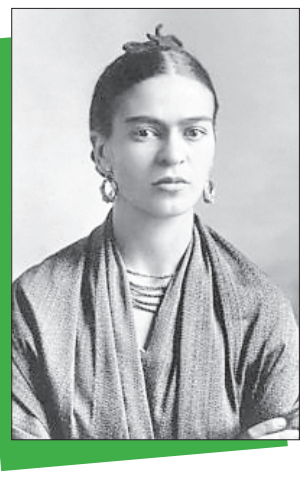

फ्रीडा काहलो प्रसिद्ध मैक्सिकन पेंटर थीं। वह छह जुलाई, 1907 को पैदा हुईं। फ्रीडा अपने सेल्फ-पोर्ट्रेट्स के लिए जानी जाती हैं। इसमें उन्होंने अपने जीवन के दर्द को दिखाया है। उन्होंने एक ऐसी विरासत बनाई, जिसने महिलाओं को अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया। फ्रीडा नेशनल प्रिपरेटरी स्कूल में एडमिशन पाने वाली पहली छात्रा थीं, जहां डिएगो रिवेरा के चल रहे काम ने उन्हें कला में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया। फ्रीडा मैक्सिकन क्रांति के दौरान बड़ी हुईं। इस कालखंड का उनके काम पर बहुत ज्यादा असर पड़ा। उनकी पेंटिंग्स में अक्सर चमकीले रंग और बोल्ड सिंबल होते हैं, जो मैक्सिको की संस्कृति और इतिहास को दिखाते हैं। एक जानलेवा एक्सीडेंट ने उन्हें बिस्तर पर ला दिया, जिसने फ्रीडा को पोर्ट्रेट पेंटिंग शुरू करने के लिए मजबूर किया। फ्रीडा डिएगो रिवेरा और अपने पिता विल्हेम काहलो से प्रभावित थीं। काहलो और रिवेरा ने आखिरकार 1929 में शादी कर ली। दोनों का रिश्ता उतार-चढ़ाव भरा रहा। अस्थिर रिश्तों के बीच, फ्रीडा ने अपनी छोटी-छोटी पेंटिंग्स बनाना जारी रखा। माना जाता है कि फ्रीडा की कला पर सर्रियलिज्म का बहुत ज्यादा प्रभाव था, जो बीसवीं सदी की शुरुआत में यूरोप में लोकप्रिय हुआ एक कला आंदोलन था। कई सर्रियलिस्ट कलाकारों के विपरीत, जो सपनों या कल्पनाओं को विषय बनाते थे, काहलो ने अपने कामों के लिए प्रेरणा के तौर पर अपने निजी अनुभवों का इस्तेमाल किया। उनका निधन 13 जुलाई, 1954 को हुआ। वह आज हर उस महत्वाकांक्षी महिला कलाकार के लिए एक रोल मॉडल हैं।

मेघालय का 'व्हिसलिंग विलेज' जहां नाम नहीं, सीटी है पहचान

पूर्वोत्तर भारत की हरी-भरी पहाड़ियों के बीच बसा मेघालय का एक छोटा-सा गांव कॉन्थोंग अपनी अनोखी परंपरा के कारण पूरी दुनिया में पहचाना जाता है। यहां लोग एक-दूसरे को नाम से नहीं, बल्कि सीटी की खास धुन से बुलाते हैं। यह कोई लोककथा या कल्पना नहीं, बल्कि गांव की जीवित और सदियों पुरानी सांस्कृतिक पहचान है। इसी वजह से कॉन्थोंग को 'व्हिसलिंग विलेज' भी कहा जाता है।

अनोखी परंपराएं

मेघालय कॉन्थोंग गांव में हर व्यक्ति की सीटी अलग होती है और वही उसकी पहचान बन जाती है। परंपरा के अनुसार, बच्चे के जन्म के बाद उसकी मां उसे एक विशेष सीटी की धुन देती है। यही धुन उसके नाम का स्थान ले लेती है और जीवनभर उसके साथ रहती है। समय के साथ यह सीटी परिवार, पड़ोस और पूरे गांव को याद हो जाती है, जिससे बिना देखे ही पहचान हो जाती है कि कौन बुला रहा है। यह अनोखी परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से सिखाई जाती रही है।

कॉन्थोंग की सीटी भाषा सिर्फ संवाद का साधन नहीं, बल्कि सामुदायिक जुड़ाव का प्रतीक भी है। यहां के लोग मानते हैं कि यह परंपरा उन्हें प्रकृति के करीब रखती है और आपसी संबंधों को मजबूत बनाती है। आधुनिक तकनीक और मोबाइल फोन के दौर में भी गांव के लोग इस विरासत को संजोए हुए हैं, जो उनकी स्वदेशी पहचान को दर्शाती है।

कॉन्थोंग की भौगोलिक संरचना इसकी इस परंपरा की सबसे बड़ी वजह है। ऊंची पहाड़ियां, गहरी घाटियां और घना जंगल सामान्य आवाजों को दूर तक पहुंचने नहीं देते। ऐसे वातावरण में बातचीत के लिए सीटी सबसे प्रभावी माध्यम बन गई। इसकी तीखी और स्पष्ट ध्वनि बिना बाधा के पहाड़ों के आर-पार चली जाती है। खेतों में काम करते हुए, जंगल में लकड़ी काटते समय या दूर किसी ढलान पर मौजूद व्यक्ति को बुलाना हो, एक सीटी ही पर्याप्त होती है। आज यह अनूठा 'व्हिसलिंग कल्चर' कॉन्थोंग को वैश्विक पहचान दिला रहा है। देश-विदेश से पर्यटक इस परंपरा को देखने और सुनने यहां आते हैं। वे सीटी की धुनों के पीछे छिपी भाषा और भावनाओं को समझने की कोशिश करते हैं। कॉन्थोंग इस तरह संस्कृति, प्रकृति और परंपरा का सुंदर संगम बनकर भारत की विविध सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

पंजाब की फुलकारी: रंगों और परंपरा की कढ़ाई

लोकायन

फुलकारी पंजाब की फुलकारी एक प्रसिद्ध और अत्यंत प्रिय कढ़ाई कला है, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा मानी जाती है। यह कला अपने जीवंत रंगों, बारीक हाथ की सिलाई और पारंपरिक प्रतीकों के लिए जानी जाती है। फुलकारी कढ़ाई में प्राय: रेशमी और रंगीन धागों का उपयोग किया जाता है। इसमें फूल, पत्तियां, जालियां, बेल-बूटे और कभी-कभी पशु-पक्षियों की आकृतियां उकेरी जाती हैं। कपड़े की उलटी सतह से की गई है। यह कढ़ाई सामने की ओर जादुई और चमकदार रूप में उभरती है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी महिलाओं द्वारा सहेजी और आगे बढ़ाई गई है, जो उनके रचनात्मक कौशल और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। फुलकारी केवल एक कढ़ाई कला नहीं, बल्कि पंजाब की स्त्री-परंपरा, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। बदलते समय के साथ आधुनिक डिजाइनों में ढलकर भी फुलकारी आज अपनी पारंपरिक आत्मा को बनाए हुए है और भारतीय हस्तकला की अमूल्य धरोहर के रूप में पहचानी जाती है।

फुलकारी कढ़ाई के प्रमुख प्रकार

- **पाक फुलकारी**- यह फुलकारी की सबसे लोकप्रिय शैली मानी जाती है। इसमें कपड़े के अधिकांश हिस्से को घनी कढ़ाई से भर दिया जाता है। विभिन्न रंगों के धागों से फूलों और ज्यामितीय आकृतियों का निर्माण किया जाता है। यह शैली विशेष रूप से विवाह और उत्सवों में पहनी जाती है।
- **छम्मास फुलकारी**- छम्मास फुलकारी में एक ही रंग के चमकीले धागे से बारीक टांकों का प्रयोग किया जाता है। कई बार इसमें सोने या चांदी के धागों का भी उपयोग होता है, जिससे कढ़ाई अत्यंत आकर्षक दिखाई देती है। इसका प्रयोग दुपट्टों और साड़ियों में किया जाता है।
- **घुंघट बाग फुलकारी**- इस शैली में फूलों और पत्तियों की आकृतियां इस तरह बनाई जाती हैं कि वे घुंघट या बाग का आभास देती हैं। बहुरंगी धागों से सजी यह फुलकारी पारंपरिक पंजाबी महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय रही है।
- **सैंची फुलकारी**- सैंची फुलकारी अपने प्राचीन रंगों और विविध डिजाइनों के लिए जानी जाती है। इसमें लाल, हरा, नीला, पीला और सफेद जैसे रंगों का सुंदर संयोजन होता है। इसका उपयोग परिधानों के साथ-साथ टेबल कवर और सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है।
- **चोपे फुलकारी**- चोपे फुलकारी विवाह से जुड़ी एक विशेष शैली है। इसे पारंपरिक रूप से दुल्हन को भेंट किया जाता है। इसमें सीमित रंगों और नियमित पैटर्न का प्रयोग होता है, जो इसे गरिमामय और विशिष्ट बनाता है।